द्वितीय सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

संस्कृत साहित्य का इतिहास

PAPER CC – 7

"संस्कृत गीति काव्य का विकास"

गीति काव्य को सामान्यतः प्रबंध काव्य के विलोम रूप में देखा जाता है। प्रबंध में विषयवस्तु का कथात्मक विस्तार के साथ ही विस्तृत फलक पाया जाता है जबकि गीति काव्य में किसी एक एकांगी विषय का चित्रण होता है। सामान्य रूप से गीति काव्य में काव्यशास्त्रीय रूढ़ियों और परंपराओं से मुक्त होकर कवि अपनी वैयक्तिक चेतना और आनंद वेदना की अभिव्यक्ति करता है। स्वभावतः उसमें वेदना, आनंद, सौंदर्य, प्रेम आदि से संबंधित भावानुभूतियों की उत्कठ और उद्दाम अभिव्यक्ति होती है। वह प्रबंध की तुलना में अधिक मनोरम हो जाता है। स्वच्छंद आत्मगीति होने से गीति काव्य में निरीक्षण की सूक्ष्मता, नवीनता, कल्पना की कल्पनीयता, भाषा की सुकुमारता और पद्यों की मनोहर गेयता का अभिनव सामंजस्य प्रकट हो जाता है। गीति काव्य गेय होने के साथ ही आवश्यक नहीं कि छंदोबद्ध हो ही, उसमें लय और संगीत की अनिवार्य उपस्थिति प्रायः होती है और वह तात्विक रूप में शुद्ध अनुभूतिमूलक हुआ करती है।

संस्कृति गीतिकाव्य का स्त्रोत वैदिक सूक्तों में और पुरानों में बिखरे हुए स्तुतिमूलक स्तोत्रों में बताया जाता रहा है। मैग्डलन ने लौकिक संस्कृत में गीति काव्य की उपस्थिति 100 ई० से पूर्व बतायी है।

संस्कृत के गीति काव्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता रहा है–

1. सौंदर्य एवं श्रृंगार से संबंधित गीति काव्य
2. धार्मिक गीति काव्य
3. सुभाषित संग्रह

➢ कालिदास : मेघदूत :

प्राप्त गीति काव्यों में सर्वप्रथम कालिदास के "मेघदूत" और "ऋतुसंहार" दिखाई पड़ते हैं। 'मेघदूत' के द्वारा कालिदास श्रेष्ठतम गीतिकारों में परिगणित होते हैं। 'मेघदूत' के 121 ललित पद्यों में कवि ने एक यक्ष की विरहजनित मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है। अल्का निवासी यक्ष अपने कर्तव्य से प्रमत्त हो जाने के कारण कुबेर द्वारा निष्कासित कर दिया जाता है और अपनी प्राणवल्लभा से वियुक्त होकर रामगिरि पर अपना वर्ष भर का प्रवास व्यतीत करने लगता है। वर्षा ऋतु आने पर वह विरह से उत्पीड़ित हो उठता है और आकाश में उमड़ने वाले आषाढ़ के नये मेघ को संबोधित करता हुआ उसके माध्यम से अपनी प्रिया के पास प्रणय संदेश पठाता है। 'मेघदूत' के पूर्वार्ध में वह मेघों का मार्ग निर्दिष्ट करता है, ताकि वह सुगमता से अल्कापुरी पहुँच सके और उत्तरार्ध में विरह में डूबी अपनी प्रिया का शब्द चित्र खींचकर, ताकि मेघ उसे पहचान सके, अपना संदेश प्रेषित करता है।

इस छोटे से काव्य में कवि ने वियोग श्रृंगार के कारूण्य एवं सौकोमार्य का, स्त्री–सौंदर्य का, मनोहारिता का एवं हृदय की एकांतिकता का, भावनाओं का जो अपूर्व चित्रण किया है, वह सम्पूर्ण विश्व साहित्य में बेजोड़ माना जाता है। 'मेघदूत' की भाषा सुकुमार, प्रांजल और प्रसादमय है। कवि की कल्पनाशक्ति अभिव्यक्ति में भी अपूर्व है। विरह वेदना के अनुरूप मंद्राकांता छंद में निबद्ध कर कवि ने इसे और अधिक भाव–प्रवण बना दिया है। संदेशवाहक मेघ के समान ही कवि के वर्णन–चित्रण का प्रवाह और गति कहीं मंथर है तो कहीं द्रुत, कहीं स्तिमित (शांत) है तो कहीं नादमय। मानव और प्रकृति के बीच इस काव्य में कवि ने एक नवीन घनिष्ठता स्थापित कर दिखाई है। नारी और प्रकृति जैसे यहाँ एकात्म स्थापित कर लेते हैं। 'मेघदूत' के सभी पद्य अत्यंत श्रुतिमधुर, रससंशिक्त, गेय एवं रमणीय बन पड़े हैं। संसार की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में न केवल इसका भाषातंरण और रूपांतरण किया गया है, अपितु इसका अनुकरण भी प्रचुर रूप में दिखाई पड़ता है।

<u>ऋतुसंहार</u> :

कालिदास का दूसरा गीति काव्य उनकी प्रारंभिक रचना "ऋतुसंहार" है जो छह ऋतुओं के अनुरूप छह सर्गों में है और उसमें कुल मिलाकर 144 पद्यों में छह ऋतुओं का मनोरम वर्णन है। रचना कौशल की प्रौढ़ता के अभाव के बावजूद यह इस अर्थ में विलक्षण है कि संस्कृत काव्य में अबतक ऋतुओं का सांपोपांग वर्णन–चित्रण नहीं हुआ था। यहाँ ऋतुओं

का परिचय मात्र नहीं बल्कि, प्रेमी मनुष्य की दृष्टि से परिलक्षित ऋतु सौंदर्य का स्निग्ध और आकर्षक वर्णन हुआ है। यहाँ भी शब्द–विन्यास अनुप्रासमय और कवि के चयन विवेक का परिचायक है। भाषा सरल और सम्प्रेषणधर्मी है।

➢ घटकर्पर काव्य :

कालिदास के बाद 22 पद्यों की एक छोटी सी गीति रचना "घटकर्पर काव्य" पायी जाती है जिसमें एक नवोढ़ा वधू वर्षा ऋतु के आने पर मेघ के माध्यम से अपने पति के पास संदेश भेजती है। यमक अलंकार की यहाँ भरमार दिखाई पड़ती है और काव्य पर 'मेघदूत' की गहरी छाया भी।

नोट : (घटकर्पर, विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे।)

➢ भर्त्तृहरि :

भर्त्तृहरि के मुक्तक पद्यों के तीन शतक प्राप्त होते हैं: 1. नीतिशतक, 2. श्रृंगार शतक और 3. वैराग्य शतक।

सातवीं शती के भर्त्तृहरि ने "नीतिशतक" में परोपकार, वीरता, साहस, उद्यन, उदारता, शील, विद्या–व्यसनिता आदि उदात्त मनोभावों का मनोरम पद्यों में स्मृति में टिक जाने वाले वर्णन किए हैं। औद्यत्य, धनमद, दुर्जनों और मूर्खों के द्वारा सज्जनों के अपमान आदि के प्रति प्रखर समीक्षण दृष्टि प्रदर्शित की है।

"श्रृंगार शतक" में रमणियों के मोहक सौंदर्य पुरूष को आकृष्ट करने के उनके विभिन्न हाव–भाव से कवि गहरा परिचय प्रकट करता है किन्तु ध्यान से देखने पर कवि का उद्देश्य रमणी सौंदर्य तथा प्रणय को सर्वोच्च मानकर उसका चित्रण करना नहीं बल्कि उनके आकर्षण और काम मूलक प्रेम की निःस्सारता का बोध कराकर वैराग्य की ओर उन्मुख करना प्रतीत होता है। कवि दृष्टि में, नारी सुख और दुःख, आकर्षण और विकर्षण की ओर अतिप्रणय से अप्रणय की ओर बढ़ता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

"वैराग्य शतक" में सांसारिक आकर्षणों और भोगों के प्रति उदासीनता एवं वैराग्य की भावना उभरती है। प्रत्येक वस्तु में कवि की समदृष्टि दिखाई पड़ती है। जीवन की चरम सफलता और सार्थकता कवि इसी वैराग्य भावना में दिखाता है।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : ausheeroy.roy@gmail.com